

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय

नई दिल्ली

18 दिसंबर, 2025

'स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड में ब्लास्ट फर्नेस के निष्पादन पर सीएजी की रिपोर्ट संसद में प्रस्तुत

'स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड में ब्लास्ट फर्नेस के निष्पादन पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) की रिपोर्ट (लेखापरीक्षा रिपोर्ट संख्या 38/2025), को आज संसद के दोनों सदन में प्रस्तुत किया गया।

प्रमुख लेखापरीक्षा निष्कर्ष:

इस्पात संयंत्र की उत्पादन प्रक्रिया में ब्लास्ट फर्नेस एक महत्वपूर्ण इकाई है और यह तप्त धातु का उत्पादन करती है, जो इस्पात निर्माण के लिए प्राथमिक कच्चा माल है। तप्त धातु को स्टील मेल्टिंग शॉप और फिर रोलिंग मिलों में संसाधित किया जाता है, जिससे अर्ध-निर्मित/तैयार इस्पात का उत्पादन होता है। इसलिए, संपूर्ण इस्पात निर्माण प्रक्रिया में ब्लास्ट फर्नेस की उत्पादन क्षमता की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

कच्चे माल, ईंधन और सेवाओं का आकलन, उपलब्धता और खपत

स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) के इस्पात संयंत्रों ने प्रमुख कच्चे माल की अपनी वार्षिक आवश्यकता का पर्याप्त रूप से नियोजन किया था, सिवाय कोल डस्ट इंजेक्शन (सीडीआई) कोयले के, जिसकी उपलब्धता 54 प्रतिशत से 83 प्रतिशत के बीच रही।

सेल की ब्लास्ट फर्नेस लौह अयस्क में लौह सामग्री की मात्रा में भिन्नता के कारण सामान्य से अधिक लौह अयस्क लम्प का उपयोग किया। पेलेट्स के अनियमित उपयोग ने भी लौह अयस्क लम्प की अधिक खपत में योगदान दिया। कुल मिलाकर, वर्ष 2017-22 के दौरान 0.823 मिलियन टन लौह अयस्क लम्प की अतिरिक्त खपत हुई, जिसका मूल्य ₹186.26 करोड़ था। सेल द्वारा दल्ली खदानों (भिलाई इस्पात संयंत्र), राउरकेला इस्पात संयंत्र और गुआ खदानों (बोकारो इस्पात संयंत्र) में परिकल्पित पेलेट संयंत्र निर्माणाधीन था। 2017-2024 के दौरान SAIL के संयंत्रों ने निर्धारित मानकों से अधिक सिंटर की खपत की, जिसके परिणामस्वरूप 3.023 मिलियन टन सिंटर की अतिरिक्त खपत हुई, जिसका मूल्य ₹1,636.41 करोड़ था। 2017-

2024 के दौरान SAIL के लगभग सभी इस्पात संयंत्रों में सीडीआई कोयले की खपत लक्ष्य से कम रही, जिसके कारण ₹6,259.25 करोड़ का संभावित अतिरिक्त व्यय हुआ।

2017-24 के दौरान अधिकांश वर्षों में सेल संयंत्रों में विशिष्ट बिजली की खपत निर्धारित मानकों से अधिक रही, जिसका कारण तप्त धातु के लक्षित उत्पादन का न होना था। इसके परिणामस्वरूप 2017-2024 के दौरान ₹310.48 करोड़ का संभावित परिहार्य व्यय हुआ।

ब्लास्ट फर्नेस का परिचालन प्रदर्शन

वर्ष 2017-2024 के दौरान सेल केवल 126.15 मिलियन टन तप्त धातु का उत्पादन कर सका, जबकि वार्षिक व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य के अनुसार इसका नियोजित उत्पादन 140.88 मिलियन टन और इस्पात मंत्रालय के साथ समझौता ज्ञापन के अनुसार 130.96 मिलियन टन था। ब्लास्ट फर्नेस की पूंजीगत मरम्मत समय पर पूरी नहीं हो सकी, जिसके कारण ब्लास्ट फर्नेस के नियोजित शटडाउन को समय पर सुनिश्चित नहीं किया जा सका और इस प्रकार पूंजीगत मरम्मत में देरी को टाला नहीं जा सका। संयंत्र संचालन के लिए उपलब्ध कुल 8,90,694 घंटों में से, ब्लास्ट फर्नेस का उपयोग केवल 8,20,969 घंटों के लिए किया गया और कच्चे माल की कमी, स्टील मेल्टिंग शॉप्स द्वारा तप्त धातु की कम मांग, तकनीकी और अन्य विविध मुद्दों के कारण 2017-2024 के दौरान अनियोजित शटडाउन के कारण ब्लास्ट फर्नेस उपलब्ध घंटों के 8 प्रतिशत समय तक बंद रहें। इसके परिणामस्वरूप, 2017-24 के दौरान 6.993 मिलियन टन तप्त धातु का उत्पादन नहीं हो सका और ₹7,986.97 करोड़ का संभावित योगदान मार्जिन भी हासिल नहीं हो सका।

इस्पात संयंत्रों में सभी ब्लास्ट फर्नेस के लिए सभी तकनीकी-आर्थिक मापदंडों के मानदंड निर्धारित नहीं किए गए थे। सेल की ब्लास्ट फर्नेस हॉट ब्लास्ट तापमान, ऑक्सीजन संवर्धन, ब्लास्ट दबाव और ब्लास्ट आयतन के वांछित स्तरों/मानदंडों को पूरी तरह से प्राप्त नहीं कर सकीं।

ब्लास्ट फर्नेस उत्पादन

राउरकेला और बोकारो इस्पात संयंत्रों में तप्त धातु और कच्चे इस्पात की उत्पादन क्षमता में असंतुलन को दूर करने के उद्देश्य से शुरू की गई परियोजनाओं के कार्यान्वयन में काफी देरी हुई। राउरकेला इस्पात संयंत्र में चौथे स्लैब कास्टर की स्थापना और स्टील मेल्टिंग शॉप-III की स्थापना तथा बोकारो इस्पात संयंत्र में नए सिंटर संयंत्र की स्थापना और स्टील मेल्टिंग शॉप-

। की आधुनिकीकरण में देरी हुई, जिसके परिणामस्वरूप अनुमानित वार्षिक बचत ₹1,172.94 करोड़ के संभावित नुकसान का सामना करना पड़ा।

सुरक्षा एवं पर्यावरण संबंधी मुद्दे

भिलाई, राउरकेला और दुर्गापुर संयंत्रों ने सुरक्षा ऑडिट की सभी सिफारिशों को लागू किया, जबकि बोकारो ने 40 में से 30 सिफारिशों का पालन किया और ईस्को ने 84 में से 83 सिफारिशों का पालन किया। हालांकि, कुछ प्रमुख मुद्दे जैसे कि प्रेशर वेसल्स के प्रेशर रिलीफ वाल्व का परीक्षण, केबल गैलरी में फ्लोरोसेंट साइन, फायर डिटेक्शन अलार्म का काम न करना आदि का पालन नहीं किया गया। 2017-2021 के दौरान ईस्को स्टील प्लांट के बीएफ कास्ट हाउस डी-फ्यूमिंग सिस्टम से निकलने वाले अपशिष्ट का स्तर निर्धारित मानकों से अधिक था। कोयले की खपत निर्धारित मानकों से अधिक थी और अतिरिक्त खपत के कारण 2017-2024 के दौरान 13.97 मिलियन टन CO₂ गैस का उत्पादन हुआ। भिलाई, बोकारो, राउरकेला और ईस्को स्टील ने पूरे ठोस कचरे का उपयोग या बिक्री की, जबकि दुर्गापुर स्टील प्लांट 2017-2024 के दौरान ब्लास्ट फर्नेस स्लज का केवल 45 प्रतिशत ही उपयोग कर सका।